अनुवाद की प्रासंगिकता

डॉ० जिन्दर सिंह मुण्डा
विभागाध्यक्ष, हिन्दी
डीएसपीएमयू, रॉंची

①

अनुवाद का लक्ष्य मात्र एक भाषा के भाव-वैभव को विकसित करना ही नहीं होता वरन् उसके ध्वन्यात्मक प्रतीकों को भी दूसरी भाषा में यथावत रूपांतरित और प्रतिस्थापित करना होता है। इसीलिए अनुवाद को "एक सांस्कृतिक सेतु" की संज्ञा भी प्राप्त हुई है। अनुवाद मानव सभ्यता के साथ ही विकसित एक ऐसा तकनीक है जिसका आविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडम्बनाओं से बचने के लिए किया था।

आज संपूर्ण संसार एक छोटे से गाँव के रूप में बदलता जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने हमें एक ऐसे मुकाम पर पहुँचा दिया है जहाँ से विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक सेकेंड साधना अत्यधिक सुगम हो गया है। आज संपूर्ण विश्व में आपसी सहयोग, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का बड़ी तेजी से विकास हो रहा है। नए-नए बोध व ज्ञान का विपुल भंडार आज किसी एक देश तक सीमित नहीं रह गया है बल्कि यह निरंतर विश्व के कोने-कोने में अनुवाद के माध्यम से पहुँच रहा है। आज व्यापार, पर्यटन, उद्योग, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, तकनीक सांस्कृतिक संबंधों में जितनी तेजी से हो रहा है उतनी ही तेजी से अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। ऐतिहासिक, भौगोलिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि कारणों से उत्पन्न हुई भिन्नताओं की तह में मानव-चेतना की जो नैसर्गिक एकता अंतर्निहित होती है, अनुवाद उसे ही प्रकाशित करता है और अपकेंद्रीकरण की भेदक प्रवृत्तियों को दबाकर उन्हें समेकित करने का प्रयास करता है। आज मात्र विश्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, विशेष रूप से दक्षिण एशिया में तो भारत का दबदबा कायम है, अतः इस समग्र क्षेत्र में आपसी तालमेल व सौहार्द

Scanned with CamScanner

को बनाए रखने के लिए भी अनुवाद अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

विश्व संस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान अत्यंत ही महत्वपूर्ण रहा है। धर्म एवं दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी, वाणिज्य एवं व्यवसाय, राजनीति एवं कूटनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध है। संस्कृति की प्रगति वस्तुतः अनुवाद रूपी धुरी पर आश्रित है। अतः ऐसे चक्र की परिकल्पना की जा सकती है जो संस्कृति के भौतिक, भावनापरक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं को गतिशील बनाने में अनुवाद के योगदान को दिखा सकता है। यूरोप के नवजागरण में ग्रीक एवं लैटिन के ग्रन्थों के अनुवाद की बलवती भूमिका रही। आधुनिक भारत के सांस्कृतिक नवोत्थान में भी पश्चिमी साहित्य के अनुवादों का बड़ा हाथ रहा है। बेबिलोन की संस्कृति बहुभाषी लोगों की संस्कृति थी और उनके प्रशासनिक कार्य-कलापों तक में अनुवाद का महत्वपूर्ण हाथ था। रोम के लोगों ने सम्पूर्ण यवन संस्कृति को अनुवाद के माध्यम से अपनाया था। अरबों ने तो भारत के गणितशास्त्र, खगोल विज्ञान एवं आयुर्वेद के ग्रन्थों का अनुवाद करके विश्व संस्कृति के विकास की भूमिका तैयार की थी। चरक, सुश्रुत आदि के आयुर्वेद ग्रन्थ एवं आर्यभट्ट, वराहमिहिर आदि के खगोलविज्ञान के ग्रन्थों का अनुवाद अरबी में विशेष रूप से हुआ है। भारतीय दार्शनिक एवं आध्यात्मिक ग्रन्थों के अनुवादों ने विश्व की भौतिक एवं आध्यात्मिक संस्कृति को कई प्रकार से विकसित किया। भारतीय संस्कृति का मूलरूप यदि आज भी भारतीय जनता के जीवन में ज्यों का त्यों मिल जाता है तो इसका श्रेय रामायण, महाभारत, भागवत आदि के भारतीय भाषाओं में किये गये अनेक रूपांतरों को प्राप्त है।

क्रमशः

Scanned with CamScanner

भारत जैसे विशाल राष्ट्र में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए अनुवाद नितांत आवश्यक है। एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश के श्रेष्ठ साहित्य व साहित्यकारों का परिचय हम अनुवाद से प्राप्त करते हैं तथा इसके द्वारा हम भारत के साहित्य में चिरंतन रूप से प्रवाहित होती एकता की व साम्य की परंपरा को देख पाते हैं इससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है।

विश्व स्तर पर प्राप्त ज्ञान को शिक्षा में समाहित करना अनुवाद द्वारा ही संभव है। प्राइमरी से उच्चतर शिक्षा तक क्षेत्रीय भाषा से हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद के महत्त्व को स्वतः सिद्ध करता है। सरकारी कामकाज हो, राष्ट्रीय स्तर पर कामकाज के लिए राजभाषा हिंदी में काम करना अनिवार्य है। इसके लिए केंद्र सरकार कार्यालयों, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों इत्यादि में हिन्दी अधिकारी, सहायक निदेशक, उप-निदेशक, निदेशक जैसे उच्च स्तर के अधिकारियों की नियुक्ति की गई साथ ही हिन्दी अधिकारी व हिन्दी अनुवादकों की अनेक नियुक्तियाँ की गई।

यदि किसी वस्तु, उत्पाद या व्यापार को विश्व स्तर पर पहुँचाना हो तो अंग्रेजी व विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद अनिवार्य है। आजकल जीवन रक्षक औषधियों पर इनके नाम हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखे मिलते हैं। यह अनुवाद की अनिवार्यता का द्योतक है।

संचार माध्यम चाहे वे मुद्रण से जुड़े (प्रिंट मीडिया) हो अथवा इलेक्ट्रॉनिक (दूरदर्शन, रेडियो, कम्प्यूटर) मीडिया से जुड़े हो अनुवाद तो संचार माध्यमों की प्राणवायु है। मीडिया में अनुवाद और अनुवादकों का जमघट लगा रहता है, परंतु इन्हें अनुवादक न कहकर सहायक संपादक, उपसंपादक आदि के पदनामों से भी जाना जाता है।

Scanned with CamScanner

उद्घोषक भी अपने मौलिक स्वरूप में अनुवादक ही होता है। आज का सूचना का विस्फोट अनुवाद का ही परिणाम है।

वैज्ञानिक सूचनाओं के आदान-प्रदान में, राजनीतिक एवं कूटनीतिक व्यवहार में वर्तमान दौर अनुवाद की अनिवार्यता स्वयंसिद्ध है। विश्व राजनीति में 'तीसरी दुनिया' के देशों का महत्व पहले से अधिक बढ़ गया है और इस कारण से अनुवाद की संभावनाएँ भी बढ़ जाती है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की मान्यता प्राप्त भाषाओं - अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी एवं अरबी के अतिरिक्त हिन्दी, स्पेनिश आदि भाषाओं का महत्व भी अनुवाद के क्षेत्र में बढ़ गया है। मारिशस, फिजी, सुरीनाम, कनाडा आदि देशों की प्रमुख भाषा के रूप में और विभिन्न भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली भाषा के रूप में हिंदी एक व्यापक अनुवाद-माध्यम बनती जा रही है।

21वीं शताब्दी अंतरराष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी है और इस कारण से इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा जाता है। संप्रेषण के नये माध्यमों के आविष्कारों ने "वसुधैव कुटुम्बकम' की उपनिषदीय कल्पना को साकार बना लिया है। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में परस्पर अनुवाद की तो आवश्यकता है ही, लेकिन विश्वभाषाओं से भी अनुवाद की अनिवार्यता है। यूनेस्को जैसी संस्थाएँ विश्वभाषाओं से अनुवाद की दिशा में कार्यरत हैं तो साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट, ज्ञानपीठ आदि संस्थाएँ भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद कार्य को विकसित कर रही हैं। अनुवाद द्वारा हम मानव के इस 'विश्व कुटुम्ब' में सम्पूर्ण एकता एवं समझदारी की भावना विकसित कर सकते हैं, मैत्री एवं भाईचारे को विकसित कर सकते हैं और गुटबन्दी, संकुचित प्रान्तीयवाद आदि से मुक्त होकर मानवीय एकता के मूल बिन्दु तक पहुँच सकते हैं।